

आज मोरे साई की मंगल वाधाई है।

बोला वाधाई है वाधाई है वाधाई है॥

चैत्र पूर्णिमा शुभ घड़ी आई देवनि वर्षा वर्षाई है॥

ऊंची अटरिया पै नौबत बाजे, अंगना में शहनाई है॥

अमड़ि सुखदेवी अ ज़ायो लालु सलोनी

सत्गुरु थियड़ो सहाई है॥

प्रेम भक्ति खे प्रगटु करण लाइ रीधो रघुराई है॥

सिंधु सौभाग्य वधियो आ साकेत की सहिचरि आई है॥

स्वामी आत्माराम फूला फिरत है लालन गोद उठाई है॥

मैया सुख को कहां लौं वरणौं मानो प्रेम भण्डार पाई है॥

कबहूँ गोद लै मोद भरत है कबहूँ पालने झुलाई है॥

पांच शब्द धुनि अनहद बाजे जड़ चेतन हर्षाई है॥

पूर्ण चंद्र उदय भए जग में कीरति कौमुदी छाई है॥

महा आनंद मीरपुर में छांयो नाचें लोग लुगाई है॥

घर घर में उत्साह बढ़ियो है हरी नाम रट लाई है॥

गुण निधि रस निधि सुख निधि साई

मुहबत मौज मचाई है॥

साईं अमां का सत्संग निर्मल आशीशानि झर लाई है॥

श्री मैगसि चन्द्र की जै जै बोलें सदा सेवक सुखदाई है॥